रिकॉर्ड :– मुखड़ा देख ले प्राणी..... ॐ पिताश्री 11/5/1965
ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच्य इनका नाम शिव नहीं है। शिव कहा ही (जाता) है निराकार को, जिसको अपना शरी(र) नहीं है। शिव की कभी पूजा की जाती है, उनको शरीर है नहीं। यह तो सभी निराकार आत्माएँ हैं; परन्तु अपना–2 शरीर। शिवबाबा कहते हैं मुझे अपना शरीर नहीं है। तुम बच्चे पहचानते हो तब यहाँ आते हो। समझते हो यह आदि–मध्य–अंत की नॉलेज अथवा राजयोग की शिक्षा सिवाय भगवान (के) को(ई) दे ना सके। राजाई कराय ना सके। निश्चय बिगर यहाँ कोई (आ भी) नहीं सकते। पाठशाला में बैठ नहीं सकते। तुम समझते हो हम नर से नारायण बनने के लिए यहाँ आए हैं। सतयुग में ल०ना० का राज्य था। इसलिए विष्णु चतुर्भुज रूप दिखाया गया है। अब ब्रह्मा द्वारा स्थाप(ना) हो रही है। शिवबाबा है आत्माओं का बाप और प्रजापिता ब्रह्मा है मनुष्य सृष्टि का (बाप)। ये (वृद्ध) में हैं। हम शिववंशी ब्रह्माकुमारियाँ हैं। बेहद के बाप से बेहद स्वर्ग का वर्सा पाने लायक आए हैं। (पा)वन दुनिया में जाने के लिए विकारों को ज़रूर छोड़ना है। बुलाते ही हैं पतित–पावन आओ, हमको पावन बनाय पावन दुनिया का मालिक बनाओ। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना पड़े ना। तुम रावण की आसुरी मत पर चलने से पतित बने हो। अभी ईश्वरीय मत से तुम 21 जन्म राजयोग पाते हो। इस पुरानी दुनिया को आग तो लगनी ही है। होलिका भी तुम मनाते हो ना। तो तुम्हारी आत्मा तो अमर है। बाकी शरीर जल खतम हो जावेंगे। आत्मा हिसाब–किताब चुक्तू कर पवित्र हो जावेगी। विनाश तो (ज़)रूर होना ही है। बाप कहते हैं तुमने हमको बुलाया है कि आय पतित से पावन बनाओ। अब हम आया हूँ और आज्ञा है कि पवित्र (बनो)। विकार में मत जाओ। पवित्रता तो अच्छी है ना। भक्तिमार्ग में मीरा ने भक्ति के ..... विख ना पिआ; परन्तु वो पावन दुनिया का मालिक थोड़े ही बना। यहाँ तो बाप पावन बनाय तुमको पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं, तो उनकी श्रीमत पर चलना है। जानते हो शिवबाबा इन द्वारा पतित से पावन बनाते हैं। सिंध में भी पवित्रता के ऊपर .....आते थे, बहुतों को बैठे–2 (सा0) होते थे। भगवानुवाच्य काम महाशत्रु है, इसको जीतो। इस मृत्यु (लोक) में यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। अब मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। मैं फिर तुमको स्वर्ग में भेज दूँगा। सिंध में जब थे तो बहुत लखपति आते, देखते थे यहाँ पवित्रता पर ही ज़ोर देते हैं। ये बच्चियाँ भी प्रतिज्ञा कर(ने) लगीं। बाबा ने भी कहा ज्ञान अमृत पीना चाहते हो तो अपने माँ–बाप से चिट्ठी लिखवाय आओ। हम ज्ञान अमृत पीने लिए ओम मण्डली में जाती हैं। फिर विख माँगें तो कहेंगे हमारी तो प्रतिज्ञा की हुई है। हम तो विख दे ना सके। इस बात पर बहुत झगड़ा चला। सब सामना करने लग पड़े। बाबा के पास आये कहने लगे इनको (कहो) वि(ख) देवे। अरे, भगवानुवाच्य काम (महा)शत्रु है। पवित्र बनो। तुम चाहते भी हो पवित्र बनावे पवित्र दुनिया स्वर्ग में ले चलो, फिर मुझे कहते हो कि इनको कहो कि विख देवे। यह कैसे हो सकता? विख पर कचहरी में केस कर दिया। जज ने (पूछा) विख क्यों नहीं देते हो? हमने कहा, भगवानुवाच्य काम महाशत्रु है। पवित्र बनने से ही पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। क्या मैं इन(को) कहूँ विख दे अपवित्र बनो। तो कुछ कह ना सका। मैं बेहद बाप प०पि०प० (का) हुकुम मानूँ या तुम जज का मानूँ? तो क्या हुआ? केस ही निकल गया। समझाया जाता है जबकि तुम गाते हो पतित–पावन आओ, फिर तुम पतित बनने विख क्यों माँगते हो। कहते हो विख दिओ, फिर याद क्यों करते हो? क्या इस विकार से तुम पावन बनेंगे? केस उड़ गया। वो और भी बिगड़े। ये भी शास्त्रों में लगा हुआ है लाखा भवन को कौरवों ने आग लगाई..... ड्रामा तो पूरा चल ही रहा है। ये भी लिखा हुआ है कृष्ण को नदी पार ले गए। सो भी तुम जानती हो सिंध और कराची के बीच में नदी है। तो कराची में जाना पड़ा। कितनी बच्चियाँ भागीं! ये सब शिवबाबा की ही पावर थी ना। फिर कितने बच्चे को बन्द किया। पिकेटिंग की (पत्थर) मारते थे। झट सुपरिटेडेंट को लिख देते थे और पुलिस आ जाती थी। कोई कुछ कर ना सका। बाबा ताकत थी ना। यह शिवबाबा का रचा हुआ यज्ञ है। जब तक सारी दुनिया तबाह ना हो तब तक यज्ञ समाप्त हो नहीं सकता। यह सारी पुरानी दुनिया इसमें स्वाहा हो जानी है। बाकी टाइम कितना है! तुम बाप से स्वर्ग का वर्सा ले र(हे) हो। बाबा समझाता था, तुम डॉग इन मेन्जर मत बनो। बाबा के पास बड़े–2 लख(प)ति, बैरिस्टर आ(दि) लोग आते थे। समझता था, अगर तुमको यह ज्ञान अमृत ना पीना है तो औरों को क्यों सताते हो? औरों को तो पीने दो ना। ना तुम पीते (हो), ना औरों को पीने देते हो। दूसरे को क्यों रोकते हो? देहली में जाता हूँ वहाँ भी सबको समझाता हूँ। बाबा (के) पास बहुत आते हैं; क्योंकि जबरदस्ती शादी करा देते हैं। बाबा समझाते हैं– देखो, तुम कितना पैसा खर्च करेंगे कन्या पर। इससे तो तुम उनको सेन्टर खोल दो। आप ही च(ल)ती रहेगी। तुमको हिम्मत अनुसार जो देना (हो) दे दो। तो बिचारी काम चिक्षा पर चढ़ने से बच तो जावेंगे। मी(रा) का भी मिसाल है। वो (थी) भक्त माला। ये है ज्ञान मा(ला)। तुम पावन ... बन सकते हो तो दूसरे को (क्यों) रोकते (हो)। पवित्रता तो अच्छी है। अपवित्र लोग पवित्र के आगे सिर झुकाते हैं। सन्यासी लोग खुद भल पवित्र बनते हैं; परन्तु स्त्री को तो छोड़ चले जाते हैं। फिर उनका कुटुम्ब आदि में देखो कितनी खराबी हो जाती है। बाबा ऐसा नहीं कहते घरबार छोड़ दो। घर–गृहस्थ में रहते सिर्फ पवित्र बनना है। बाप का ज्ञान ना मानेंगे तो क्या हाल होवेगा। तुम ना उठाए सकते हो ना। दूसरे लिए (क्यों) रोकते हो। इसको तो स्वर्ग का वर्सा लेने (दो ना)। (बाप) आए हैं स्वर्ग में ले जाने लिए। ..... (तीन लाइन कटी हुई है).....
.....
.....

शिवबाबा हमें ब्रह्मा तन द्वारा शिक्षा देते हैं। .....। ये ब्रह्मा की मुखवंशावली है ना। तुम सब मुखवंशावली हो। एडॉप्टेड हो। प०पि०प० ने एडॉप्टेड किया है। आत्मा के रूप में तुम शिव (वंशी) हो। ब्रह्मा के बच्चे, शिव के पौत्रे–पौत्रियाँ (हो)। तुमको वर्सा मुझसे मिलता है। डाडे की मिल्कियत होती है ना। बाप कहते हैं तुम पवित्र ना बन सकते हो। अच्छा, तो पवित्र बनना चाहते हो। उनकी तो याद (हो) ना। भारत पवित्र था तो उनको सुखधाम, स्वर्ग कहा जाता था। ..... वैभव थे। भक्तिमार्ग में भी कितना भारी सोमनाथ का मंदिर बनाया है। सबसे जास्ती इनका नाम है। होंगे तो बहुतों के मंदिर। तो कितनी मिल्कियत (थी)। अभी तो गवर्मेन्ट सोना देती नहीं। वहाँ तो सोने के महल बनते थे। अभी क्या हाल है। अभी बाप कहते हैं तुमको स्वर्ग में ले चलने लायक बना रहा हूँ। बच्चे कहें, हम नालायक ही रहेंगे। लौकिक बाप के बच्चे भी आज्ञा ना माने तो क्या कहेंगे, तुम तो पूत नहीं, कपूत हो। बाप कहते हैं, मैं तो तुम्हारा कुछ भी लेता नहीं हूँ। मैं तो दाता हूँ। मैं तुम्हारी निष्कामी सेवा करने आया (हूँ)। तुमको स्वर्ग का मालिक बनाय रहे हैं। रावण फिर तुमको नर्कवासी बनाते हैं। तुमको कोई तकलीफ नहीं देते हैं। फिर भी प्रतिज्ञा कर माया के वश हो प्रतिज्ञा भूल गिर पड़ते हो। बाप समझाते हैं गिरना–चढ़ना है; परन्तु सम्भालना है। खबरदार रहना है। ये है बॉक्सिंग। माया हराने की कोशिश करेगी; परन्तु मैदान (छो)ड़ भागना नहीं है। तुम युद्ध के मैदान में खड़े हो। माया का बन ना जाना है। तुम पाप पर जीत पहन(ने) से (स्व)र्ग का महाराजा–महारानी बन सकते हो। कितना अच्छी रीति समझाते रहते हैं, फिर भी ना समझते (हो) तो क्या कहेंगे! बाबा कहते हैं, हम सिर्फ तुमको पावन बनाते हैं। पैसे भल तुम इकट्ठे अपने पास रखो; परन्तु पढ़ो तो सही। पैसा जाकर साधु–संत को दो। हमको तुम्हारे पैसे नहीं चा(हिए)। बाबा कहते हैं यह साकार रथ भी लखपति था। फिर सब कुछ ईश्वर अर्थ (डायरैक्ट) दे दिया। कन्याओं–माताओं की कितनी संभाल की है। बाप की श्रीमत पर चलने से श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बन सकेंगे। बाप के डायरैक्शन को अमल में लाना है, नहीं तो बाप क्या कहेगा। ये तो बंदर मिसल बन गए हैं। शक्ल मनुष्य की, चलन बंदर की है। सौभाग्यशाली बनने बदली और ही दुर्भाग्यशाली बन पड़ते हैं। (बाप) तो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। उनकी श्रीमत पर नहीं चलते हैं। सन्यासी लोग तो कह देते आत्मा को कुछ लगता नहीं, बाकी शरीर मूत पलीती है। उनको धोने लिए हम गंगा स्नान करने जाते हैं; परन्तु यह तो हो ना सके। आत्मा पतित बनती है तब शरीर भी पतित बनता है। आत्मा प्युअर बन (जावेगा) तो तुम्हारा शरीर भी प्युअर बन जावेगा। भट्ठी से तुम कंचन हो निकलेंगे। तो बाप समझाते हैं, मैं तु(मको) स्वर्गवासी बनाने आया हूँ, तुम फिर भी नर्कवासी बनते हो, समझते नहीं हो बाप की ..... आ जाता है। सब पर रहम करने आया हूँ। कहता हूँ गंद से निकलो तो भी निकलते ही नहीं। तकदीर ही ऐसा दिखाती है। खुद नहीं निकलते तो दूसरों को निकालने रोकते हैं। बाप तो बच्चों को ही समझाते हैं। कहते हैं, मैं ब(च्चों) के ही आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। घर के बच्चे को ही शिक्षा देते हैं। मुझे याद करो और स्वर्ग के वर्से को याद करो। तो अंत मते सो गते हो जावेगी। देह का अभिमा(न) छोड़ मुझे याद करो। मैंने तुमको सुख के संबंध में भेजा था, फिर तुम दुख के संबंध में आए। अब वापिस जा(ना) है। ये तो गंदी दुनिया है, इनसे ममत्व मिटाओ। और उपाय है नहीं पावन बनने का। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। ऐसे नहीं कि घरबार छोड़ जाना है। नहीं, मैं कोई को यहाँ रख नहीं सक(ता)। ..... ही नहीं। कराची में इतने बच्चे रहते थे गवर्मेन्ट (कु)छ कर थोड़े ही सकती थी। भट्ठी थी ना। ये तो ईश्वर का ही काम है। मनुष्य थोड़े ही इतना कार्य कर सकते। इनको भी तन–मन–धन सब स्वाहा करना पड़ा। रिटर्न में देखो बाबा क्या देते हैं। सुदामा का भी मिसाल है ना। शिवबाबा तो दाता है। अभोक्ता है। खाते ही नहीं तो पैसा फिर क्या करेंगे! सब कुछ बच्चों के लिए हैं। बच्चों को ही कहते हैं चित्र बनाओ। प्रदर्शनी करो। सेन्ट(र) खो(लो)। यह कोई सन्यासी नहीं है जो अपने रहने लिए बड़े फ्लैट आदि बनावेंगे। तन–मन–धन भारत को स्वर्ग बनाने में लगाय दो। रिटर्न में 21 ज(न्म) राजाई मिलती है। जो–2 कल्प पहले वाले होंगे, यह कोई वो ही (आवे) बाप से वर्सा लेंगे। श्रीमत पर चलो। पतित–पावन आया हूँ तुमको पावन बनाने, फिर तुम आनाकानी क्यों करते हो? बाप को भूल क्यों जाते हो? किस पर क्रोध क्या करते हो? हमेशा सुखदाई बनो। मंसा–वाचा–कर्मणा किसको दुख ना दो, नहीं (तो) दुखी होकर मरना पड़ेगा। इतना समझाने (पर) भी किसकी बुद्धि में ना बैठे तो बंदर बुद्धि कहेंगे ना। ..... यह दुखधाम खलास होना है। इसके पहले सुखधाम का वर्सा लेना है। खर्चा पाई भी नहीं। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ।

रात्रि क्लास 7/5/65 :– जबसे तुम्हें देखा है आँखों में तुम्हीं तुम हो। **A** कहती (है) जबसे तुझ आत्मा दिव्य दृष्टि से देखा, तुमको जाना है। आत्मा को चश्मा मिला है ना, जिसको ती.....हैं। दिव्य दृष्टि मिली मैं **A** हूँ। वो (ही) है मेरी आत्मा में बस, तू ही तू बसते हो। बुद्धि रूपी चक्षु .... (दो लाइन कटी हुई है)..... .....